Dr. Nutisri Dubey
Assistant Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara

U.G. Sem – IV

MJC – 05 : Western Philosophy,

Aristotle – 'Form and Matter'

(आकार एवं द्रव्य)

अरस्तू एक विकासवादी दार्शनिक है। उन्होंने आकार एवं द्रव्य (Form and Matter) के माध्यम से सृष्टि के विकास की प्रक्रिया की व्याख्या की है। उनके अनुसार द्रव्य अपने को उच्चतर आकारों में अभिव्यक्त कर रहा है इसलिए सृष्टि विकासशील है। जिन वस्तुओं में आकार विकसित हो रहा है वे उच्चस्तरीय हैं और जिन वस्तुओं में द्रव्य की अधिकता है वे निम्न स्तरीय हैं। यद्यपि अरस्तू ने आकार और द्रव्य को स्वरूपतः एक-दूसरे से पृथक नहीं माना है तथापि वैचारिक दृष्टि से दोनों का अलग-अलग विवेचन किया जा सकता है। वस्तु जगत में ऐसी कोई वस्तु नहीं मिलती है, जिसमें केवल जड़ द्रव्य हो, अर्थात् लेशमात्र भी आकार न हो। इसी प्रकार ऐसी भी कोई वस्तु दृश्य नहीं है जिसमें केवल आकार हो और

लेशमात्र भी जड़ द्रव्य नहीं। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि व्यावहारिक दृष्टि से निराकार द्रव्य और द्रव्यहीन आकार दोनों असंभव है। प्रत्येक वस्तु द्रव्य और आकार दोनों का संघात है। कोई वस्तु एक दृष्टि से द्रव्य है तो दूसरी दृष्टि से आकार है।

अरस्तू के अनुसार जिसका परिवर्तन होता है वह जड़ द्रव्य (Matter) है और जिस ओर परिवर्तन होता है वह आकार (Form) है। अरस्तू ने 'आकार' (Form) को आकृति की अपेक्षा अधिक व्यापक माना है। आकृति सदैव आकृति ही रहती है। इसके विपरीत आकार सापेक्ष होता है। एक दृष्टि से जो आकार है अन्य दृष्टि से वही द्रव्य भी हो सकता है। आकार से किसी वस्तु के सम्पूर्ण संगठन अथवा सम्पूर्ण संरचना का बोध होता है। इसके अन्तर्गत वस्तु के समस्त व्यापारों (Functions) का समावेश हो जाता है। आकार के अन्तर्गत प्रयोजनमूलक (अन्तिम) कारण का समावेश हो जाता है। इस प्रकार कार्य व्यापार के अभाव में कोई वस्तु आकार से युक्त नहीं हो सकती है। इसके विपरीत कार्य व्यापार के समाप्त हो जाने पर भी वस्तु में आकृति बनी रहती है।

अरस्तू के अनुसार द्रव्य वास्तव में तो कुछ नहीं है, परन्तु इसमें प्रत्येक वस्तु बनने की क्षमता (संभावना) होती है। उसने आकार को वास्तविकता (Actuality) और जड़ द्रव्य को को संभाव्यता (Potentiality) कहा है। प्रत्येक वस्तु का विकास संभाव्य से वास्तविक स्वरूप की ओर होता है। द्रव्य ही आकार का रूप धारण करता है। प्रत्येक वस्तु अपने से

उच्च स्तरीय वस्तु के लिए द्रव्य है और अपने से निम्न स्तर की वस्तु के लिए आकार है। कालिक दृष्टि से द्रव्य आकार का पूर्ववर्ती है क्योंकि द्रव्य संभावना या साध्यता के रूप में आकार से पहले ही विद्यमान है। इसके विपरीत तार्किक दृष्टि से आकार द्रव्य का पूर्ववर्ती है, क्योंकि द्रव्य आकार के रूप में रूपान्तरित होकर ही वास्तविकता को प्राप्त करता है।

अरस्तू के अनुसार सृष्टि विकासशील है। विकास की प्रक्रिया में सबसे निम्न स्तर पर निरपेक्ष द्रव्य (Absolute Matter) है। यह आकार से नितान्त शून्य है। इसमें आकार लेशमात्र भी नहीं है। इसके विपरीत विकास के सर्वोच्च शिखर पर निरपेक्ष आकार (Absolute Form) अथवा विशुद्ध आकार (Pure Form) है। निरपेक्ष आकार में द्रव्य का नितान्त अभाव है। निरपेक्ष द्रव्य और निरपेक्ष आकार कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं है। वास्तव में वे केवल तार्किक सत्ता के रूप में मान्य हो सकते हैं। अरस्तू इस निरपेक्ष आकार को ही 'ईश्वर' कहता है। उसका ईश्वर 'विशुद्ध आकार' (Pure Form) अथवा 'आकारों का आकार' (Forms of Forms) है।

अरस्तू के अनुसार सम्पूर्ण सृष्टि निरपेक्ष ~~आकार~~ द्रव्य और निरपेक्ष आकार के बीच स्थित है। प्राकृतिक विकास में आकार एक प्रेरक शक्ति है। इसके विपरीत द्रव्य एक अवरोधक या गति को बाधित करने वाला तत्व है।

अरस्तू ने द्रव्य के आकार में परिवर्तन को भी गति कहा है। वह गति (Motion) का प्रयोग अत्यन्त व्यापक और बहुआयामी अर्थ में करता है। इसके अन्तर्गत वस्तुओं के उद्भव, विकास, ह्रास और विनाश को भी सम्मिलित किया गया है। इसका प्रयोग गुणात्मक ~~प्रयोग~~ परिवर्तन के अर्थ में भी किया गया है। जैसे - किसी वस्तु का विभिन्न रंगों में परिवर्तन भी गति के अन्तर्गत आता है। वह परिमाणात्मक परिवर्तन (जैसे वृद्धि, ह्रास आदि) एवं संचरण (Locomotion) को शक्ति को भी गति का ही रूप मानता है। इस प्रकार एक स्थान से दूसरे स्थान तक

गमन से लेकर प्रत्येक प्रकार का परिवर्तन गति में सम्मिलित है। अरस्तू के अनुसार गति संभाव्य वस्तु की क्षमता है। यह साध्यता (Potentiality) की सिद्धि ~~(Actuality)~~ है। (Actualisation) है।

अरस्तू का विकासवाद किसी देश-काल में घटित होने वाली प्रक्रिया नहीं है। यह तार्किक प्रक्रिया है। उच्चतर आकार वास्तविक (Actual) हैं और निम्नतर आकार वास्तविक बनने के लिए प्रयत्नशील हैं। विकास की प्रत्येक अवस्था में एक ही पूर्ण आकार (ईश्वर) स्वयं को अभिव्यक्त कर रहा है। उच्चतर अवस्थाओं के आकार में निम्नतर अवस्थाओं के आकार नष्ट नहीं होते हैं। निम्न अवस्थाएं उच्च अवस्थाओं में अन्तर्निहित होती हैं। किन्तु निम्नतर आकारों की अपेक्षा उच्चतर आकार अधिक विकसित होते हैं।

अरस्तू के द्वारा आकार और द्रव्य (उपादान) को आदि कारण मान लेने से किसी भी वस्तु के अस्तित्व की व्याख्या नहीं हो पाती है क्योंकि आकार और द्रव्य के संप्रत्यय स्पष्ट एवं सुबोध नहीं हैं। इनके द्वारा किसी घटना अथवा वस्तु की व्याख्या नहीं की जा सकती। अरस्तू तत्वमीमांसीय द्वैतवाद का प्रतिपादन करता है। अतः उसके दर्शन के विरुद्ध वे सभी आपत्तियाँ लागू हो जाती हैं जो सामान्य रूप से द्वैतवादी दर्शन पर उठाई जाती है। यदि आकार और द्रव्य परस्पर विरोधी हैं तो उनके संयोग से सृष्टि की उत्पत्ति असंभव हो जायगी। आकार और द्रव्य एक दूसरे से स्वतन्त्र और भिन्न होने पर भी सृष्टि की उत्पत्ति और विकास के लिए किस प्रकार संयुक्त होते हैं? इस प्रश्न का कोई समुचित उत्तर अरस्तू नहीं दे पाते हैं। अरस्तू केवल यह कहते हैं कि आकार और द्रव्य दृश्य जगत में परस्पर अविच्छेद्य रूप से पाये जाते हैं। ऐसा क्यों होता है? इसका कोई तर्कसंगत उत्तर अरस्तू नहीं दे पाते हैं। ठीक इसी प्रकार की आपत्ति द्वैत-

वादी सांख्य दर्शन के विरुद्ध अद्वैत वेदान्तियों ने भी प्रस्तुत किया है। राय पुल सेलर्स के अनुसार आधुनिक विकासवाद की मान्यताओं से द्वैतवादी तत्वमीमांसा का निराकरण हो जाता है। यदि चेतना को आदि सत्ता न माना जाय (जैसा कि आधुनिक विकासवाद की मान्यता है) तो द्वैतवादियों का यह कहना कि चेतन और जड़ तत्व दोनों सामान्यतः मौलिक हैं सही नहीं हो सकता है। यही कारण है कि आधुनिक युग में अरस्तवी तत्व-मीमांसा को विशेष महत्व न मिल सका। अब उसका महत्व केवल ऐतिहासिक दृष्टि से ही रह गया है।

एक अन्य समस्या यह है कि आकार की सत्ता को अनिवार्यतः क्यों स्वीकार किया जाय? आकार को स्वतः सिद्ध क्यों माना जाय? विभिन्न प्रकार के आकारों में परस्पर क्या सम्बन्ध है? इत्यादि प्रश्नों का अरस्तू के दर्शन में कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिलता। अरस्तू जैविक प्राणियों के उद्भव और विकास का एक तथ्यात्मक विवरण मात्र प्रस्तुत करते हैं। जैसे — पौधों का आकार संपोषण (Nutrition), पशुओं का आकार संवेदन और मनुष्यों का आकार बुद्धि है। किन्तु अरस्तू यह सिद्ध नहीं कर पाते हैं कि विकास की एक अवस्था से दूसरी अवस्था में परि-वर्तन क्यों होता है? इससे स्पष्ट है कि अरस्तू जगत् में व्याप्त गति, परिवर्तन, विकास और ह्रास की समुचित व्याख्या नहीं कर पाता है। विकास की दार्शनिक व्याख्या के लिए यह आवश्यक है कि एक अवस्था से दूसरी अवस्था में परिवर्तन के समुचित कारणों का विवेचन, विश्लेषण और मूल्यांकन किया जाय। संपोषण संवेदन का पूर्ववर्ती क्यों है? संवेदन संपोषण की अपेक्षा और बुद्धि संवेदन की अपेक्षा अधिक उच्चतर आकार क्यों है? अरस्तू इसकी तार्किक व्याख्या करने में सफल नहीं हो पाता है।